ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 2 | Issue 9 | September 2024
Available online at: https://ijmrast.com
DOI:https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i9.82

भारत में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं और जेंडर समाजीकरण के मध्य सम्बन्धः एक विमर्श

पंकज यादव [1], प्रो.(डॉ.) दीप्ति जौहरी [2]

[1]शोध–छात्र, शिक्षाशास्त्र, बरेली कॉलेज, बरेली (एम.जे.पी.रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली)

[2]प्रभारी, शिक्षाशास्त्र विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली

Email: pankajyadav827@gmail.com[1] , deeptijohri9bcb@gmail.com[2]

सारांश

किसी भी बालक के व्यवसायिक जीवन के दृष्टिकोण से उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण होती है। भारतीय शिक्षा के ढांचे के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा के दौरान ही बालक अपने भावी कैरियर के विषय में आकांक्षाओं को आकार देना आरम्भ कर देते हैं और कालांतर में इन्हीं आकांक्षाओं के अनुरूप व्यवसाय का चयन करके उसमें अपना कैरियर बनाते हैं, बालकों की कैरियर के प्रति यह आकांक्षायें विभिन्न सामाजिक, मनोवैज्ञानिक व अन्य कारकों से प्रभावित होती रहती हैं। जेंडर समाजीकरण भी इसी प्रकार का एक महत्वपूर्ण कारक है, जो बालकों के कैरियर चयन को काफी हद तक प्रभावित करता है। जेंडर समाजीकरण के फलस्वरूप प्रायः बालक परम्परागत जेंडर भूमिकाओं के अनुरूप ही व्यवसायों का चयन करते हैं, जो कालांतर में जेंडर असमानता को स्थायित्व प्रदान करने का ही कार्य करता है। वर्तमान लेख के माध्यम से अध्ययनकर्ता द्वारा भारत में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं व जेंडर समाजीकरण के मध्य सम्बन्धों की पड़ताल करने का प्रयास इस अपेक्षा के साथ किया जा रहा है कि इस विमर्श के फलस्वरूप उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को जेंडर संवेदनशील बनाकर जेंडर पूर्वाग्रहों से मुक्त किया जा सकेगा और उन्हें उनकी नैसर्गिक क्षमताओं के अनुरूप विभिन्न गैर परम्परागत कैरियर विकल्पों का चयन करने हेतु प्रेरित किया जा सकेगा।

कुंजी शब्दः कैरियर आकांक्षा, जेंडर समाजीकरण, कैरियर चयन, जेंडर भूमिकायें इत्यादि।

प्रस्तावनाः

किसी भी व्यक्ति के उपयुक्त व्यवसाय चयन, चयनित कैरियर (वृत्ति/व्यवसाय) में भविष्य में उनकी सफलता, उस कैरियर में उनकी भूमिकाओं को आकार देने में कैरियर आकांक्षायें महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का कार्य करती हैं। चूंकि भारतीय सामाजिक व्यवस्था की संरचना भी अपने मूल रूप में पितृसत्तात्मक ही है, इस कारण भी हमारे देश में कैरियर के चुनाव अक्सर गहरी सामाजिक–सांस्कृतिक प्रथाओं, परम्पराओं, आस्थाओं व मानकों से सम्बद्ध रहते हैं और किसी न किसी रूप में जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया से प्रभावित होते रहते हैं। **"जेंडर समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने**

लिंग से जुड़े सामाजिक मानदंडों और अपेक्षाओं को सीखते और आत्मसात करते हैं, जो उनके व्यवहार, भूमिकाओं और जीवन विकल्पों को प्रभावित करते हैं।" (बंडुरा, 1986)। जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप ही विद्यार्थी अपनी जेंडर भूमिकाओं से सम्बद्ध विभिन्न व्यवहारों का आंतिरिकीकरण करते हैं और स्थापित जेंडर मानकों के अनुरूप व्यवहार करने हेतु प्रेरित होते हैं।

शिक्षा की प्रक्रिया मानव व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाने वाली प्रक्रिया के तौर पर जानी जाती है। औपचारिक शिक्षा के माध्यम से अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन कर व वांछित कौशल अर्जित करके ही कोई भी बालक भविष्य में जीविकोपार्जन हेतु सक्षम बनता है, साथ ही जीविकोपार्जन हेतु अर्जित कौशलों का अनुप्रयोग कर समाज में रचनात्मक योगदान देने योग्य भी बनता है। सामान्यतः सभी व्यक्तियों में किसी न किसी स्तर की नैसर्गिक क्षमतायें अवश्य होती हैं, भले ही उनका स्वरूप कैसा भी हो। यदि इन नैसर्गिक क्षमताओं को बिना किसी पूर्वाग्रह और भेदभाव के विकसित करने के अवसर प्रदान किये जायें, तो निश्चित ही यह नैसर्गिक क्षमतायें विकसित होकर व्यक्तिगत तौर पर उस व्यक्ति विशेष के लिये और सार्वजनिक तौर पर सम्पूर्ण मानव समाज के लिये हितकर साबित होंगीं। दुनियाभर के जिन समाजों में शक्ति पितृसत्ता में निहित है, उनमें जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया बचपन से ही बालकों को स्थापित जेंडर मानकों के अनुरूप उनकी जेंडर भूमिकाओं के लिये प्रशिक्षित करने का कार्य करती रहती है और कालांतर में जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप विभिन्न जेंडर आधारित परम्परागत भूमिकाओं में ही व्यक्ति स्वयं को ढाल लेता है, भले ही उसकी नैसर्गिक क्षमतायें इन भूमिकाओं के अनुरूप हों या न हों। कैरियर के क्षेत्र में अनुपयुक्त भूमिकाओं का चयन कार्य के प्रति असंतुष्टि एवं निम्न स्तरीय प्रदर्शन के रूप में परिलक्षित होता है। यह स्थिति स्पष्ट तौर पर कैरियर आकांक्षाओं और जेंडर समाजीकरण के जटिल सम्बन्धों की ओर संकेत करती है।

अध्ययन की आवश्यकता व महत्वः

चूंकि भारतीय शिक्षा व्यवस्था के ढांचे के हिसाब से उच्च माध्यमिक स्तर शिक्षा का वह स्तर है, जहां आकर विद्यार्थी अपनी कैरियर आकांक्षाओं के क्रम में विभिन्न कैरियर विकल्पों में से उपयुक्त कैरियर का चुनाव करते हैं और इस हेतु उपयुक्त विषय–संयोजन का ध्यान रखते हैं, इसलिये यह समझना बेहद आवश्यक है कि इस स्तर पर किसी भी विद्यार्थी की कैरियर सम्बन्धी आकांक्षाओं को प्रभावित करने में जेंडर समाजीकरण जैसे महत्वपूर्ण कारक की भूमिका किस प्रकार की रहती है। इस स्थिति की पड़ताल करने के उद्देश्य से इस प्रकार के विमर्श की आवश्यकता महसूस होती है।

इस अध्ययन का विमर्श शिक्षकों, शिक्षाविदों, प्रशासकों और शिक्षा से जुड़े विभिन्न हितकारकों को यह समझने हेतु महत्वपूर्ण होगा कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं और जेंडर समाजीकरण के सम्बन्धों की जटिलता का स्वरूप क्या है और कैरियर आकांक्षाओं को प्रभावित करने में

जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया किस प्रकार अपनी भूमिका निभा सकती है। इस दृष्टिकोण से इस अध्ययन के विमर्श से प्राप्त निष्कर्ष निश्चित ही महत्वपूर्ण साबित होंगे।

अध्ययन का उद्देश्यः

इस अध्ययन के माध्यम से भारतीय परिवेश में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं और उनके जेंडर समाजीकरण के मध्य जटिल सम्बन्धों की संरचना की पड़ताल करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन की अवधारणाः

अध्ययनकर्ता ने स्वयं समाज की विभिन्न स्थितियों का अवलोकन किया है, जिस आधार पर अध्ययनकर्ता की अवधारणा है कि समाज में विभिन्न स्तरों पर व्यक्तियों को जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया प्रभावित करने का कार्य करती है, जो उनके जीवन के विभिन्न पक्षों को प्रभावित करने का कार्य करती है।

वर्तमान अध्ययन हेतु अवधारणा की बात की जाये, तो इस अध्ययन के संदर्भ में यही अवधारणा है कि भारत में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं और जेंडर समाजीकरण के मध्य घनिष्ठ और जटिल सम्बन्ध है, जो प्रायः जेंडर असमानताओं को बढ़ावा देने का कार्य करते हैं।

अध्ययन–अभिकल्पः

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधान की गुणात्मक शोध विधि के अर्न्तगत विभिन्न विद्वानों द्वारा इस विषय पर किये गये अध्ययनों के माध्यम से व द्वितीयक आंकड़ों के विश्लेषण के माध्यम से उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं व जेंडर समाजीकरण के मध्य सम्बन्धों पर विमर्श करने का प्रयास किया गया है।

अवधारणात्मक पृष्ठभूमिः

1. कैरियर आकांक्षा की अवधारणाः

आकांक्षाओं का वह स्वरूप जो किसी व्यक्ति को उसके कैरियर विकल्प चुनने हेतु, उनके प्रति प्रेरित करने व उन्हें आकार देने में सहायक हो, कैरियर आकांक्षा कहलाता है। कैरियर आकांक्षायें ही किसी भी व्यक्ति को भविष्य में किसी विशिष्ट क्षेत्र में अपना भविष्य बनाने हेतु प्रेरित करने व उस विशिष्ट क्षेत्र में जाने हेतु अपेक्षित योग्यतायें, क्षमतायें व कौशल अर्जित करने हेतु प्रेरित करती हैं।

"कैरियर आकांक्षायें विद्यार्थियों के भविष्य के कैरियर लक्ष्यों और महत्त्वाकांक्षाओं को दर्शाने का कार्य करती हैं, जो व्यक्तिगत रुचियों, मूल्यों, सामाजिक अपेक्षाओं, और संसाधनों की उपलब्धता जैसे विभिन्न कारकों से प्रभावित होती हैं। (गिंसबर्ग, 1951)।

गिंसबर्ग (1951) का कैरियर विकास सिद्धान्त कहता है कि कैरियर विकास एक जीवनभर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें मुख्य रूप से तीन चरण समाहित होते हैं, पहला चरण कल्पनाओं से जुड़ा हुआ

होता है, जब बालक अपने कैरियर विकल्पों को लेकर विभिन्न प्रकार की कल्पनायें करता है, विभिन्न प्रकार की आकांक्षायें रखता है। दूसरा चरण अस्थाई होता है, जिसमें वह अपने कैरियर हेतु की गई विभिन्न आकांक्षाओं को आकार देने की दिशा में प्रयास करता है। जबकि तीसरा चरण यथार्थवादी है और यह चरण तब शुरु होता है, जब व्यक्ति किसी व्यवसाय विशेष में अपना कैरियर शुरु कर देता है और उसी विशिष्ट कैरियर में अपनी प्रास्थिति को मजबूत करने का प्रयास करने लगता है।

उच्च माध्यमिक स्तर पर, कैरियर से सम्बन्धित निर्णय अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि इस स्तर पर आकर विद्यार्थियों को अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप कैरियर में जाने हेतु विशिष्ट पाठ्यक्रम और शैक्षणिक विषयों का चयन करना होता है और इसी क्रम में उच्च शिक्षा या व्यावसायिक मार्ग पर आगे बढने हेतु तैयारी करनी होती है। रूढ़िबद्ध व परम्परागत भारतीय समाज में विद्यार्थियों के लिये कैरियर सम्बन्धी आकांक्षायें प्रायः सामाजिक मानदंडों और अभिवावकों के प्रभावों के कारण आकार पाती हैं, जिससे यह आवश्यक हो जाता है कि यह जाना जाये कि इन बाहरी दबावों का लड़कों और लड़कियों की पसंद पर क्या प्रभाव पड़ता है।

2. **जेंडर समाजीकरण की अवधारणाः**

जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया किसी भी व्यक्ति के जन्म के तुरंत बाद से ही प्रारम्भ हो जाती है। यह प्रक्रिया किसी भी बालक या व्यक्ति को समाज में स्त्री या पुरुष होने के कारण उसकी भूमिकाओं, दायित्वों व सामाजिक अपेक्षाओं का बोध कराने का कार्य करती है, जिससे उसे समाज में सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप अपनी स्थिति को समझने में सहायता मिलती है। यह प्रक्रिया बालकों को स्थापित जेंडर मानकों के अनुरूप व्यवहार करने हेतु प्रेरित करती है और धीरे–धीरे उन्हें सामाजिक मान्यताओं व अपेक्षाओं के क्रम में स्थापित जेंडर मानकों के अनुरूप व्यवहार करने हेतु प्रशिक्षित करने का कार्य करती है। **''यह प्रक्रिया पारिवारिक अंतः क्रियाओं, साथी समूहों से अंतः क्रियाओं, शिक्षा प्रणालियों, मीडिया प्रस्तुतियों और सामाजिक अपेक्षाओं के माध्यम से सुदृढ़ होती रहती है।''** भारत की पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्थाओं में स्थापित जेंडर मानदंडों के कारण पारंपरिक जेंडर भूमिकाओं को प्रारंभिक अवस्था से ही मजबूत किया जाने लगता है। **''लड़कों को अक्सर विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, और गणित (STEM) या व्यवसाय में कैरियर की आकांक्षा रखने के हेतु प्रोत्साहित करने का प्रयास जाता है, जिन्हें उच्च स्थिति वाले कैरियर के रूप में मान्यता दी जाती है, जबकि लड़कियों को प्रायः शिक्षा, कला, स्वास्थ्य सेवाओं जैसे लचीले कैरियर की ओर उन्मुख होने हेतु समाजीकृत किया जाता है, जो देखभाल करने वाली भूमिकाओं के साथ अधिक मेल खाते हैं।''.....(सिकदार और मित्रा, 2012)।**

3. **जेंडर स्टीरियोटाइप (रूढ़ियाँ) और कैरियर विकल्प**

जेंडर आधारित स्टीरियोटाइप्स (रूढ़ियाँ) कैरियर आकांक्षाओं को आकार देने, सीमित करने या विस्तृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का कार्य करती हैं। विभिन्न अध्ययनों से पता चलता है कि,

''लड़कों को प्रायः महत्वाकांक्षी, प्रतिस्पर्धी और कैरियर–उन्मुख होने के लिए समाजीकृत किया जाता है, जबकि लड़कियों को पोषण और देखभाल पर जोर देने वाली भूमिकाओं की ओर उन्मुख करने हेतु निर्देशित किया जाता है।''..... (एकल्स, 2011)।

''जेंडर समाजीकरण से प्रेरित सामाजिक अपेक्षायें लड़कियों के लिये विभिन्न अग्रणी कैरियर विकल्पों जैसे– इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, या नेतृत्व पदों जैसे गैर–पारंपरिक कैरियर में जाने की सम्भावनाओं को सीमित कर सकती हैं, और उनकी आकांक्षाओं को उन क्षेत्रों तक सीमित कर सकती हैं जो अधिक स्त्रीलिंग रूढ़ियों के साथ मेल खाते हैं (लेगवी और डिप्रेट, 2014)। दूसरी ओर, लड़कों पर कला, सामाजिक कार्य, या शिक्षा जैसे करियर से बचने का दबाव भी हो सकता है क्योंकि इन विशिष्ट कैरियर विकल्पों को **''स्त्रीलिंग''** कैरियर क्षेत्रों के तौर पर रूढ़िबद्ध कर दिया जाता है।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा:

1. **मैकव्हाइर्टर (1997)** ने "Perceived Barriers to Education and Career: Ethnic and Gender Differences" के आधार पर कहा कि कैरियर चयन में महिला प्रतिभागियों ने पुरुष प्रतिभागियों की अपेक्षा अधिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही उन्होंने कैरियर चयन में दिखने वाले अंतरों को जेंडर समूहों पर आधारित माना।
2. **रोड्रिगो (2000)** के द्वारा अपने लघु शोध प्रबन्ध "Gender role stereotyping in occupational choices" में यह जानने का प्रयास किया कि विद्यार्थियों के कैरियर व्यवसायिक चयन किस प्रकार जेंडर भूमिकाओं से रुढ़िग्रस्त है? अध्ययन के आधार पर पाया गया कि व्यवसायिक चयन जेंडर रूढ़ियों से ग्रसित हैं। निष्कर्ष में यह भी शामिल था कि सम्पूर्ण कैरियर चयन और जेंडर को लेकर सार्थकता पाई गई।
3. **गदस्सी व गेटी (2009)** के शोध अध्ययन "The Effect of Gender Stereotypes on Explicit and Implicit Career Preferences" का निष्कर्ष है कि कैरियर प्राथमिकताओं के मामले में महिलाओं पर पुरुषों की अपेक्षा रुढ़ियों का अधिक प्रभाव है।
4. **फवारा (2012)** ने अपने अध्ययन "The Cost of Acting "Girly": Gender Stereotypes and Educational Choices" के आधार पर पाया कि परिवेश द्वारा जेंडर वरीयताओं को संशोधित किया जाना सम्भव है।
5. **गणेसन (2014)** ने अपने शोध "Gender Differences in Self-Concept Consistency and Career Choices under Stereotype Threat" के आधार पर पाया कि जेंडर रूढ़ियां पुरुषो व महिलाओं दोनों को उनकी आत्म–'अवधारणाओं और भावी कैरियर चयन को किस प्रकार प्रभावित करने का कार्य करती हैं।

उपरोक्त सभी अध्ययन इसी ओर संकेत करते हैं कि जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया बालकों की कैरियर आकांक्षाओं और कैरियर सम्बन्धी निर्णयों को प्रभावित करने का कार्य करती रहती है।

विश्लेषण:

कैरियर आकांक्षाओं और जेंडर समाजीकरण के मध्य सम्बन्धः भारतीय सामाजिक ढांचे के विशेष संदर्भों में:

परिवार व समाज का प्रभावः

भारतीय सामाजिक संरचना में कैरियर आकांक्षाओं को निर्धारित करने में परिवार की मुख्य भूमिका रहती है। अभिवावक अपनी संततियों के कैरियर विकल्पों पर अक्सर मजबूत प्रभाव डालते हैं, जो जेंडर के स्थापित मानकों से प्रेरित समाज की अपेक्षाओं से विशेष तौर पर प्रभावित होते हैं। **मुखोपाध्याय (2016)** ने अपने अध्ययन के आधार पर कहा कि भारतीय माता–पिता अपने बेटों को इंजीनियरिंग, चिकित्सा, या प्रबंधन में कैरियर बनाने हेतु अधिक प्रोत्साहित करते हैं, जबकि बेटियों को सुरक्षित और अपेक्षाकृत कम मांग वाले कैरियर विकल्पों जैसे शिक्षण या नर्सिंग की ओर प्रोत्साहित किया जाता है, जो पारंपरिक जेंडर भूमिकाओं के साथ मेल खाते हैं।

"भारत की सामाजिक संरचना में पारिवारिक ढांचा भी एक भूमिका निभाता है, जहां माता–पिता के अतिरिक्त बड़े भाई, बहन, दादा–दादी, चाचा–चाची सहित अन्य सभी रिश्तेदार भी जेंडर के स्थापित मानदंडों को मजबूत करने में योगदान करते हैं। ये मानदंड अक्सर यह निर्धारित करते हैं कि लड़कियों को कैरियर से अधिक शादी और परिवार को प्राथमिकता देनी चाहिए, जिससे वे अधिक महत्वाकांक्षी या असामान्य क्षेत्रों में आकांक्षाओं को सीमित कर देती हैं।".....(शर्मा और घोष, 2018)।

उच्च माध्यमिक स्तर पर आते–आते विद्यार्थियों के परिवार के सदस्य उनसे इस विषय पर चर्चा करने लगते हैं कि उन्हें किस प्रकार के कैरियर विकल्पों को चुनना चाहिये और चूंकि परिवार सामान्यतः पितृसत्तात्मक व्यवस्थाओं के पोषक ही होते हैं, इसलिये वे जेंडर मानकों के अनुरूप ही सलाह देकर विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं को गहरे अर्थों में प्रभावित करने का कार्य करते हैं।

शिक्षण संस्थाओं का प्रभावः

शिक्षण संस्थायें, उनकी विभिन्न प्रक्रियायें व उनका वातावरण भी जेंडर–आधारित मानदण्डों को मजबूत करने का कार्य करती हैं और विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं में योगदान देती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में भारतीय शिक्षण संस्थाओं में कैरियर मार्गदर्शन हेतु सेवाओं का स्वरूप सीमित हो सकता है, और विद्यार्थी प्रायः अपने साथियों, शिक्षकों या परिवार के सदस्यों के सुझावों के आधार पर ही जेंडर से प्रभावित कैरियर विकल्पों की ओर उन्मुख होते हैं। **"शिक्षकगण भी अपनी अवचेतना में बसे जेंडर पूर्वाग्रहों से प्रभावित होकर अनभिज्ञता में ही सही लड़कों को गणित और भौतिकी जैसे विषयों को चुनने और लड़कियों को भाषाओं और सामाजिक विज्ञान का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।"..... (बासु, 2019)**

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों से प्रायः यही अपेक्षा की जाती है कि वे अपने भविष्य के कैरियर लक्ष्यों के अनुसार एक निश्चित शैक्षणिक वर्ग (विज्ञान, वाणिज्य, या कला) का चयन करें। हालांकि, **जेंडर समाजीकरण के प्रभाव के कारण, लड़के विज्ञान को चुनने की अधिक संभावना रखते हैं, जबकि लड़कियां कला या वाणिज्य चुनने की प्रवृत्ति रखती हैं.....(चौधरी और रॉय, 2020)**। जेंडर पूर्वाग्रहों से प्रभावित इस चयन के कारण कैरियर आकांक्षाओं में जेंडर असमानता और भी अधिक बढ़ जाती है, जिससे **STEM** क्षेत्रों में जाने की आकांक्षा रखने वाली लड़कियों की संख्या अपेक्षाकृत कम हो जाती है।

साथी समूहों का प्रभावः

उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा के दौरान चूंकि विद्यार्थी प्रायः किशोरावस्था में होते हैं, ऐसे में साथी समूहों और साथी समूहों की विभिन्न अवधारणाओं का प्रभाव भी उन पर गहरे रूप में होता है। सभी साथी भी अपनी–अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण विभिन्न जेंडर आधारित अवधारणाओं को विकसित कर ही लेते हैं और इस प्रकार साथी समूहों में होने वाले विभिन्न वार्तालाप व अर्न्तक्रियायें भी जेंडर मानकों के अनुरूप जेंडर भूमिकाओं और कैरियर विकल्पों के प्रति रूझानों को मजबूत करने का कार्य करते हैं।

मीडिया का प्रभावः

उच्च माध्यमिक स्तर तक आते–आते विद्यार्थियों की रुचि मीडिया और उनकी विभिन्न प्रस्तुतियों में गहरी होने लगती है। इसीलिये भारतीय सामाजिक व्यवस्था में मीडिया प्रस्तुतियाँ भी जेंडर–आधारित कैरियर आकांक्षाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। टेलीविज़न शो, फिल्में, और विज्ञापन अक्सर पुरुषों को डॉक्टरों, इंजीनियरों, और व्यावसायिक नेताओं जैसी शक्तिशाली भूमिकाओं में चित्रित करते हैं, जबकि महिलाओं को गृहिणियों, शिक्षकों, या नर्सों जैसी उदार भूमिकाओं में दिखाया जाता है। **''मीडिया की प्रस्तुतियाँ पारंपरिक जेंडर भूमिकाओं को और भी अधिक सुदृढ़ करती हैं और लड़कों और लड़कियों दोनों की ही कैरियर आकांक्षाओं को सीमित करती हैं।''..... (कपूर, 2021)**

उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थी मीडिया द्वारा प्रस्तुत छवियों और उनके प्रभावों से प्रभावित हुये बिना बच नहीं पाते हैं और इन प्रस्तुतियों के प्रभाव में आकर ही अपने लिये विभिन्न रोल मॉडल्स तय करते हैं, जोकि प्रायः जेंडर मानकों को मजबूत करने का ही कार्य कर रहे होते हैं। फलतः जेंडर आधारित भूमिकाओं के प्रति अवधारणायें और मजबूत होती हैं जो कि विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं को भी प्रभावित करती हैं।

निष्कर्षः

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि भारतीय सामाजिक व्यवस्था में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षायें गहरे अर्थों में जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया से

प्रभावित होती हैं, जो विभिन्न रूपों में भविष्य में इन विद्यार्थियों के कैरियर चयन को प्रभावित करने का कार्य करती हैं। उपरोक्त विमर्श के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि सामान्यतः समाज में स्थापित जेंडर मानकों के अनुरूप कैरियर चयन भविष्य में जेंडर भूमिकाओं को सुदृढ़ बनाने और जेंडर असमानताओं को बढ़ाने का ही कार्य करते हैं। भारत के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों छात्रों की करियर आकांक्षाओं और लिंग समाजीकरण के बीच संबंध उन व्यापक सामाजिक संरचनाओं को भी दर्शाते हैं जो विभिन्न जेंडर भूमिकाओं को आकार देने का कार्य करती हैं। जेंडर स्थापित मानकों और जेंडर पूर्वाग्रहों से प्रभावित कैरियर चयन एक ओर समाज में जेडर असमानता को बढ़ावा देते हैं तो दूसरी ओर व्यक्तियों को उनकी नैसर्गिक क्षमताओं और रुचियों वाले कैरियर विकल्पों को सीमित करने का भी कार्य करते हैं, जो कि अंतिम रूप से समाज के लिये अहितकर ही सिद्ध होता है। यदि जेंडर समावेशी और जेंडर–तटस्थ (Gender Neutral) दृष्टिकोण अपनाकर परिवार, समाज, विद्यालय और मीडिया जैसे अभिकरण बालकों और उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को पोषित करें, और उन्हें उनकी नैसर्गिक क्षमताओं व वास्तविक रुचियों के अनुसार कैरियर चुनने हेतु प्रेरित करें तो निश्चित ही एक ऐसे समाज का गठन होना सम्भव हो जायेगा जो अपेक्षाकृत अधिक जेंडर संवेदनशील हो और जिसमें जेंडर आधारित असमानताओं के लिये स्थान न हो।

सुझावः

1. परिवार और समाज जैसे समाजीकरण के प्रमुख अभिकरणों को जेंडर तटस्थ व्यवहार हेतु प्रेरित किया जाये और उन्हें अधिक जेंडर संवेदनशील बनाने के प्रयास किये जायें, ताकि यह अभिकरण बिना किसी पूर्वाग्रह के बालकों को कैरियर चयन हेतु प्रेरित कर सकें।
2. अभिवावकों और शिक्षकों, शिक्षा प्रशासकों आदि को जेंडर स्टीरियोटाइप्स और इनके प्रभावों के बारे में जागरूक करने के प्रयास किये जायें, और उन्हें बालकों की नैसर्गिक कैरियर आकांक्षाओं, रुचियों और क्षमताओं के क्रम में प्रेरित किये जाने का प्रयास किया जाये, ताकि वे बालकों पर पारम्परिक जेंडर भूमिकाओं को न थोपें।
3. विभिन्न पाठ्यक्रम जो जेंडर रूढ़ियों को बढ़ावा देते हों और जेंडर के स्थापित मानकों को मजबूत करने का कार्य करते हों, उनमें संशोधन के प्रयास किये जाने चाहिये। ताकि इन पाठ्यक्रम में स्थापित जेंडर आधारित रुढ़ियों और मिथकों को तोड़ा जा सके, जो किसी न किसी रूप में विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं को सीमित करने का कार्य करती हैं।
4. मीडिया जगत और मीडिया प्रतिनिधियों हेतु भी विशेष जेंडर संवेदनशील कार्यक्रम और कार्यशालायें चलाकर जेंडर संवेदनशील बनाये जाने के प्रयास किये जाने चाहियें, ताकि वे जेंडर आधारित रूढ़िबद्ध छवियों को बढ़ा चढ़ाकर प्रस्तुत करने के बजाय जेंडर तटस्थ छवियां प्रस्तुत करें, जिससे कि अध्ययनरत विद्यार्थी अपने आदर्श/रोल मॉडल्स चुनते समय जेंडर तटस्थ होकर निर्णय ले सकें।

सन्दर्भ सूची:

[1]. Bandura, A. (1986). Social foundations of thought and action: A social cognitive theory. Englewood Cliffs, NJ: Prentice Hall.

[2]. Basu, R. (2019). Gender stereotypes in education: The role of teachers in India. Journal of Gender Studies, 22(3), 198-212.

[3]. Chaudhuri, S., & Roy, A. (2020). Stream selection and gender differences in career aspirations among Indian students. Indian Journal of Psychology, 44(2), 112-125.

[4]. Eccles, J. (2011). Gendered educational and occupational choices: Applying the Eccles et al. model of achievement-related choices. International Journal of Behavioral Development, 35(3), 195-201.

[5]. Favara, M. (2012). The Cost of Acting'Girly': Gender Stereotypes and Educational Choices. (Retrieved from: http://ftp.iza.org/dp7037.pdf)

[6]. Gadassi, R., & Gati, I. (2009). The effect of gender stereotypes on explicit and implicit career preferences. *The Counseling Psychologist*, *37*(6), 902-922. (Retrieved from: https://www.researchgate.net/publication/240280415_The_Effect_of_Gender_Stereotypes_on_Explicit_and_Implicit_Career_Preferences)

[7]. Ganesan, A. (2014). Gender differences in self-concept consistency and career choices under stereotype threat. (Retrieved from: https://scholarworks.uni.edu/cgi/viewcontent.cgi?article=1088&context=etd)

[8]. Ginzberg, E. (1951). Career development and aspirations: A life span perspective. American Psychologist, 6(7), 345-357.

[9]. Kapur, A. (2021). Media, gender, and career aspirations: The portrayal of professions in Indian cinema. Asian Journal of Media Studies, 13(1), 85-101.

[10]. Legewie, J., & DiPrete, T. A. (2014). The gendered pathways into STEM fields: The effects of resources, preparation, and policies. Sociology of Education, 87(3), 181-206.

[11]. Lytton, H., & Romney, D. M. (1991). Parents' differential socialization of boys and girls: A meta-analysis. Psychological Bulletin, 109(2), 267-296.

[12]. McWhirter, E. H. (1997). Perceived barriers to education and career: Ethnic and gender differences. *Journal of vocational behavior*, *50*(1), 124-140. (Retrieved from https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S0001879185715369)

[13]. Mukhopadhyay, A. (2016). The influence of parental expectations on career aspirations in Indian adolescents. Indian Journal of Child Development, 32(2), 123-140.

[14]. Rodrigo, P. M. (2000). Gender role stereotyping in occupational choices. (Retrieved from: https://rdw.rowan.edu/etd/2308/)

[15]. Sharma, N., & Ghosh, P. (2018). Gender socialization and career aspirations among Indian adolescents: A study in patriarchal society. Journal of Adolescence Studies, 25(4), 59-76.

[16]. Sikdar, S., & Mitra, A. (2012). Career aspirations and gender: A study of Indian adolescents. Gender and Society, 28(3), 257-269.

[17]. पंकज यादव, & प्रो) .दीप्ति जौहरी (.डा).2023). जेंडर आधारित हिंसा से प्रभावित स्त्रियों के मामलों पर एक विश्लेषण. *ldealistic Journal of Advanced Research in Progressive Spectrums (IJARPS) eISSN–2583-6986*, *2*(09), 145-159.

[18]. प्रो) .दीप्ति जौहरी .2024). भारतीय सामाजिक परिवर्तन में सावित्रीबाई फुले के अथक प्रयासों का विश्लेषण. *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology*, *2*(6), 37-41. (DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i6.65)

Cite this Article

पंकज यादव, प्रो.(डा.) दीप्ति जौहरी, "भारत में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं और जेंडर समाजीकरण के मध्य सम्बन्धः एक विमर्श", International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 2, Issue 9, pp. 55-64, September 2024.

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i9.82*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.